IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"पारंपरिक कृषि का व्यावसायीकरण और फसल विविधीकरण की ओर स्थानान्तरण : जयपुर जिले की चौमू तहसील के संदर्भ में अध्ययन"

शैतान मल जाट,
शोधार्थी, भूगोल विभाग, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
डॉ. अजेय विक्रम सिंह चंदेल,
प्राचार्य, जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या महाविद्यालय कोटा

सारांश

जीवन–निर्वाह कृषि से बाजार–उन्मुख कृषि की ओर हुए बदलाव ने फसल–पद्धतियों, आय के स्तर और संसाधनों के उपयोग को प्रभावित किया है। सिंचाई, बाजार तक पहुँच और प्रौद्योगिकी जैसे प्रमुख कारकों का सामाजिक–आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभाव फसल विविधीकरण पर पड़ा है। पारंपरिक रूप से धीरे–धीरे बाजार–मुखी खेती की ओर स्थानान्तरण देखा गया है, खासकर सरसों, गेहूँ और अधिक कीमत वाली सब्जियों की तरफ। राजस्थान के जयपुर जिले की चौमू तहसील एक अर्ध–शुष्क क्षेत्र है, जहाँ कृषि क्षेत्र में काफी बदलाव आने लगे हैं। यह अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। समय के साथ खेती के तरीकों में आए बदलावों का आकलन करने के लिए फसल विविधता, फसल गहनता और तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

चौमू तहसील में कृषि के व्यवसायीकरण को सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, शहरी बाजारों से नजदीकी, आधुनिक कृषि तकनीकों और कीमतों के अनुकूल तंत्र आदि कारकों ने बढ़ावा दिया है। फसलों में विविधता काफी बढो है पारंपरिक एकल फसल प्रणाली से बहु–फसल प्रणाली और व्यावसायिक फसलों की ओर बदलाव देखा गया है। इससे कुछ पर्यावरणीय और सामाजिक–आर्थिक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जैसे कि भूजल का कम होना, मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट और बाजार के उतार–चढ़ावों पर बढ़ती निर्भरता। निष्कर्षतः जहाँ एक ओर व्यवसायीकरण और फसलों में विविधता ने किसानों की आय और कृषि उत्पादकता को बढ़ाया है, वहीं दूसरी ओर लंबे समय तक स्थिरता बनाए रखने के लिए टिकाऊ कृषि पद्धतियाँ और संसाधनों का कुशल प्रबंधन बेहद जरूरी है।

मुख्य बिन्दु : व्यवसायीकरण, फसल विविधीकरण, फसल प्रणाली, टिकाऊ कृषि।

प्रस्तावना

कृषि पारंपरिक रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ अधिकांश आबादी अपनी आजीविका के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर है। राजस्थान जैसे अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में कृषि न केवल एक आर्थिक गतिविधि है, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका भी है, जो पर्यावरणीय बाधाओं, सामाजिक–आर्थिक स्थितियों और तकनीकी प्रगति से प्रभावित होता है।

पिछले कुछ दशकों में भारतीय कृषि में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है, जिसकी पहचान जीवन–निर्वाह–उन्मुख उत्पादन से हटकर बाजार–संचालित कृषि प्रणालियों की ओर धीरे–धीरे बढ़ते रुझान से होती है। इस प्रक्रिया को आमतौर पर कृषि का व्यावसायीकरण कहा जाता है। कृषि के व्यावसायीकरण में फसलों का उत्पादन मुख्य रूप से अपने उपभोग के लिए नहीं बल्कि बाजार में बेचने के उद्देश्य से किया जाता है। यह कृषि के व्यापक आर्थिक प्रणाली के साथ एकीकरण को दर्शाता है, जहाँ किसान कीमतों के संकेतों, बाजार की माँग और लाभप्रदता संबंधी विचारों के अनुसार अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।

व्यावसायीकरण के साथ–साथ, भारतीय कृषि में एक और महत्वपूर्ण परिघटना फसल विविधीकरण है। इसका तात्पर्य पारंपरिक एकल–फसल या सीमित फसल–पद्धतियों से हटकर, अधिक विविध और बहु–फसल प्रणाली को अपनाने से है। फसल विविधीकरण को अक्सर जोखिम कम करने, आय बढ़ाने और भूमि के सतत उपयोग की एक रणनीति माना जाता है।

अध्ययन क्षेत्र

चौमू तहसील राजस्थान के जयपुर जिले में जयपुर शहर के उत्तर–पश्चिमी हिस्से में स्थित है। यह $27^0 05'$ से $27^0 25'$ उत्तरी अक्षांश और $75^0 30'$ से $75^0 50'$ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। यह तहसील सड़क नेटवर्क से अच्छी तरह जुड़ी हुई है और जयपुर–सीकर राजमार्ग (NH–52) पर स्थित है, जिससे यहाँ पहुँचना आसान हो जाता है और कृषि व्यापार में भी सुविधा मिलतो है। जयपुर शहर से चौमू की नजदीकी इसकी कृषि अर्थव्यवस्था को आकार देने में अहम भूमिका निभाती है, क्योंकि इससे बाजारों तक पहुँच, परिवहन की सुविधाएँ और कृषि उत्पादों की शहरी माँग तक पहुँच मिलती है।

चौमू तहसील पूर्वी राजस्थान के अर्ध–शुष्क मैदानों का हिस्सा है। यहाँ की जमीन आम तौर पर समतल से लेकर हल्की ऊबड़–खाबड़ है। कृषि गतिविधियों के लिए उपयुक्त है। इस क्षेत्र में कोई बड़ी पहाड़ी या नदी नहीं है, हालाँकि मॉनसून के मौसम में मौसमी नाले बहते हैं। बारहमासी जल स्रोतों की कमी के कारण यहाँ की कृषि मुख्य रूप से बारिश और भूजल संसाधनों पर निर्भर करती है। चौमू तहसील की मिट्टी मुख्य रूप से रेतीली दोमट (Sandy loam), दोमट मिट्टी (Loamy soils) है। अध्ययन क्षेत्र की मुख्य विशेषताएँ मध्यम उर्वरता, पानी रोकने की क्षमता कम, बाजरा, सरसों, गेहूँ और सब्जियों जैसी फसलों के लिए उपयुक्त है।

अध्ययन के उद्देश्य

जयपुर जिले की चौमू तहसील की पारंपरिक कृषि का व्यावसायीकरण और फसल विविधीकरण की ओर झुकाव का अध्ययन पर आधारित उद्देश्य भौगोलिक दृष्टिकोण से बदलते कृषि परिदृश्य का व्यवस्थित रूप से परीक्षण करना है। इस अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

- चौमू तहसील में कृषि व्यावसायीकरण का अध्ययन करना।
- फसल विविधीकरण के पैटर्न का विश्लेषण करना।
- फसल पैटर्न में बदलाव को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।
- सतत कृषि रणनीतियों का सुझाव देना।

अनुसंधान तकनीक

अनुसंधान की प्रकृति में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है। यह अध्ययन क्षेत्र–आधारित अवलोकनों, सांख्यिकीय विश्लेषण और भौगोलिक व्याख्या को एकीकृत करती है। सूचकांकों का उपयोग विविधीकरण और विशेषज्ञता पैटर्न के वैज्ञानिक मापन को सुनिश्चित करता है। प्राथमिक डेटा क्षेत्रीय सर्वेक्षण, संरचित प्रश्नावली तथा साक्षात्कार माध्यमों से एकत्र किया गया है। द्वितीयक डेटा के स्रोतों में ब्लॉक सांख्यिकी रूपरेखा गोविन्दगढ़, जिला सांख्यिकी जयपुर व कृषि विज्ञान केंद्र की रिपोर्टें शामिल हैं।

विश्लेषण

चौमू तहसील कृषि बदलावों का अध्ययन करने के लिए एक आदर्श स्थान है, क्योंकि यहाँ की जलवायु अर्ध–शुष्क, शहरी बाजारों स निकटता और यहाँ की कृषि पद्धतियाँ लगातार विकसित हो रही हैं। पारंपरिक रूप से चौमू तहसील की कृषि में मोटे अनाजों का वर्चस्व था। साथ ही दालं और सीमित मात्रा में गेहूँ की खेती की जाती थी। यह कृषि अनिश्चित मानसूनी वर्षा पर निर्भर थी। सिंचाई की सुनिश्चित व्यवस्था का अभाव और बार–बार पड़ने वाले सूखे की स्थितियाँ किसानों को कम जोखिम वाली, केवल जीवन–निर्वाह के उद्देश्य से की जाने वाली फसल–पद्धतियों तक ही सीमित रखती थीं।

सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, बाजारों और कृषि–सामग्रियों (inputs) तक बेहतर पहुँच उपलब्ध होने से, इस क्षेत्र की फसल–पद्धति में एक स्पष्ट बदलाव देखने को मिला है। किसान सरसों, सब्जियों और गेहूँ जैसी उच्च–मूल्य वाली और व्यावसायिक फसलों को अपना रहे हैं, जिनसे बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। यह संक्रमण न केवल कृषि पद्धतियों में बदलाव को दर्शाता है, बल्कि किसानों की सामाजिक–आर्थिक सोच में आए परिवर्तन का भी प्रतीक है।

कृषि का व्यावसायीकरण

कृषि का व्यावसायीकरण उस बदलाव को दर्शाता है जिसमें कृषि, केवल जीवन–निर्वाह के लिए की जाने वाली खेती से बदलकर बाजार–उन्मुख खेती बन जाती हैय इसमें फसलें मुख्य रूप से अपने उपभोग के लिए नहीं, बल्कि बेचने के उद्देश्य से उगाई जाती हैं। जयपुर जिले की चौमू तहसील में, पिछले तीन दशकों के दौरान यह बदलाव और भी स्पष्ट रूप से

दिखाई देने लगा है, जिसका श्रेय बेहतर बुनियादी ढाँचे, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार और शहरी बाजारों से निकटता को जाता है।

कृषि के व्यावसायीकरण के संकेतक

चौमू तहसील में व्यावसायीकरण के स्तर को निम्नलिखित संकेतकों के माध्यम से समझा जा सकता है–

क्र.सं.	व्यावसायीकरण के संकेतक	व्यावसायीकरण के प्रभाव
	नकदी फसलों की ओर बदलाव	सरसों की खेती में वृद्धि सब्जी की खेती का विस्तार मोटे अनाजों की खेती में कमी
	बाजार–उन्मुख उत्पादन	किसान बाजारों में बेचने के लिए फसलें उगाते हैं। मंडियों (कृषि बाजारों) में भागीदारी में वृद्धि। कीमतों के संकेतों और मांग पर बढ़ती निर्भरता।
	आधुनिक साधनों का उपयोग	अधिक उपज देने वाली किस्में (HYV बीज) रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और सिंचाई पंपों के उपयोग में वृद्धि
	सिंचाई का विस्तार	ट्यूबवेल व बोरवेल में तीव्र वृद्धि वर्षा–आधारित कृषि से सिंचित कृषि की ओर बहु–फसलीकरण संभव
	फसल सघनता में वृद्धि	अधिक भूमि पर वर्ष में कई बार खेती की जाती है प्रति इकाई क्षेत्र उत्पादकता में वृद्धि
	वाणिज्यिक फसलें	सरसों → सबसे महत्वपूर्ण नकदी फसल सब्जियां → टमाटर, मिर्च, प्याज (शहरों के निकट) गेहूं → वाणिज्यिक निर्वाह (दोनों उद्देश्यों के लिए)

व्यावसायीकरण का स्थानिक स्वरूप

चौमू तहसील में कृषि का व्यावसायीकरण एक समान नहीं है–

क्र.सं.	व्यावसायीकरण का स्तर	क्षेत्र
1.	अत्यधिक व्यावसायीकृत क्षेत्र	जयपुर शहर के निकट के गांव बेहतर सिंचाई सुविधाओं वाले क्षेत्र
2.	कम व्यावसायीकृत क्षेत्र	वर्षा–आधारित क्षेत्र जल की कमी वाले क्षेत्र

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जल और बाजार तक पहुंच से प्रभावित एक स्पष्ट स्थानिक भिन्नता दिखाई देती है।

व्यावसायीकरण को बढ़ावा देने वाले कारक

चौमू तहसील में कृषि का व्यावसायीकरण, सिंचाई के विस्तार, तकनीकी प्रगति और शहरी बाजारों से निकटता के कारण, बाजार–उन्मुख खेती प्रणालियों की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है। जहाँ इसने कृषि उत्पादकता और किसानों की आय को बढ़ाया है, वहीं इसने पर्यावरणीय और आर्थिक चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। इसलिए दीर्घकालिक कृषि स्थिरता के लिए, सतत व्यावसायीकरण पर जोर देने वाला एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है।

क्र.सं.	कारक	विवरण
1.	भौतिक कारक	भूजल की उपलब्धता उपयुक्त मृदा की स्थितियां
2.	आर्थिक कारक	तिलहन और सब्जियों की उच्च मांग बेहतर मूल्य प्राप्ति जयपुर बाजार से निकटता
3.	तकनीकी कारक	सिंचाई तकनीक (ट्यूबवेल) यंत्रीकरण (मशीनों का उपयोग) HYV बीज
4.	संस्थागत कारक	सरकारी सब्सिडी कृषि विस्तार सेवाएं ऋण सुविधाएं

फसल विविधीकरण का स्वरूप

फसल विविधीकरण का तात्पर्य पारंपरिक एकल–फसल या सीमित फसल प्रणालियों से हटकर, अधिक विविध और बहु–फसल संरचना को अपनाने से है। यह कृषि विकास, जोखिम प्रबंधन और आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। चौमू तहसील में, सिंचाई के विस्तार, बाजार की मांग और तकनीकी प्रगति के कारण फसल विविधीकरण में काफी वृद्धि हुई है।

क्र.सं.	पारंपरिक फसल प्रारूप	वर्तमान फसल प्रारूप
1.	खरीफ मौसम में बाजरा की प्रधानता	पारंपरिक फसलों के क्षेत्र में कमी
2.	दलहनों (चना, मूंग) की खेती	सब्जी की खेती में बढ़ोतरी
3.	रबी मौसम में गेहूं का सीमित उत्पादन	सिंचाई के तहत गेहूं के उत्पादन में वृद्धि
4.	फसल सघनता का निम्न स्तर	दोहरी फसल प्रणाली को अपनाना
5.	सिंचाई और आधुनिक साधनों का न्यूनतम उपयोग	सरसों (नकदी फसल) का विस्तार
6.	एकल–फसल प्रणाली	बहु–फसल प्रणाली

फसल विविधीकरण का मापन

फसल विविधीकरण कृषि विकास और स्थिरता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यह दर्शाता है कि किसान जमीन को अलग–अलग फसलों के बीच किस हद तक बाँटते हैं। CDI, Herfindahl और Entropy जैसे सूचकांकों का उपयाग करके फसल विविधीकरण का मापन कृषि परिवर्तन का विश्लेषण करने के लिए एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। बढ़ते CDI मान स्पष्ट रूप से विविधीकृत और वाणिज्यिक कृषि की ओर बदलाव का संकेत देते हैं। हालांकि स्थिरता और संसाधनों के संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए संतुलित विविधीकरण आवश्यक है।

फसल विविधीकरण सूचकांक (CDI) का मान 0 और 1 के बीच होता है। चौमू तहसील में CDI मान समय के साथ कम से मध्यम उच्च विविधीकरण की ओर बदलाव दिखाते हैं। चौमू तहसील के विभिन्न हिस्सों में फसल विविधीकरण का स्थानिक स्वरूप अलग–अलग है।

क्र.सं.	फसल विविधीकरण सूचकांक (CDI)	स्तर	क्षेत्र
1.	0.0 – 0.3	कम विविधीकरण	वर्षा–आधारित क्षेत्र ऐसे क्षेत्र जहां भूजल की उपलब्धता कम है।
2.	0.3 – 0.6	मध्यम विविधीकरण	शहर स मध्यम व अधिक दूरी वाले गांव जहां भूजल की उपलब्धता है।
3.	0.6 से ऊपर	उच्च विविधीकरण	जयपुर शहर के पास के गांव सिंचाई सुविधाओं वाले क्षेत्र सब्जी की खेती करने वाले क्षेत्र

निष्कर्ष

विश्लेषण से पता चलता है कि कृषि का व्यावसायीकरण काफी बढ़ा है और किसान अब सरसों, गेहूँ और सब्जियों जैसी ज्यादा कीमत वाली फसलों को ज्यादा अपना रहे हैं। इस बदलाव में ट्यूबवेल के जरिए सिंचाई की बेहतर सुविधा, जयपुर शहर के बाजारों से नजदीकी, और अधिक पैदावार देने वाली किस्मों, उर्वरकों और खेती की मशीनों जैसे आधुनिक कृषि साधनों को अपनाने का अहम योगदान रहा है। इसके परिणामस्वरूप फसल गहनता, उत्पादकता और किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

फसल विविधीकरण के एक स्पष्ट रुझान को उजागर करता है, जिसमें पारंपरिक 'एकल–फसल प्रणाली' (mono–cropping) से हटकर अधिक विविध फसल पैटर्न की ओर बदलाव देखने को मिल रहा है। फसल विविधीकरण सूचकांक (CDI) जैसे सांख्यिकीय संकेतकों के उपयोग से इस बात की पुष्टि होती है कि विविधीकरण का स्तर, जो पहले काफी कम था, अब बढ़कर मध्यम या उच्च स्तर तक पहुँच गया है। इस विविधीकरण स जोखिम कम करने, जमीन का बेहतर उपयोग करने और किसानों के लिए आर्थिक स्थिरता बढ़ाने में मदद मिली है।

कृषि के व्यावसायीकरण और फसल विविधीकरण का प्रभाव दोहरी प्रकृति का है। एक ओर कृषि उत्पादकता, आय के स्तर और ग्रामीण विकास को बढ़ाया है, वहीं दूसरी ओर भूजल की कमी, मृदा क्षरण और बाजार के जोखिमों के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। सरकारी नीतियों, सब्सिडी और कृषि विस्तार सेवाओं के रूप में मिले संस्थागत सहयोग ने भी व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने में योगदान दिया है। इसलिए दीर्घकालिक विकास के लिए सतत कृषि और संसाधनों के संरक्षण पर केंद्रित एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है।

चौमू तहसील में कृषि का भविष्य सतत, कुशल और समावेशी रणनीतियों को अपनाने पर निर्भर करता है। जल की कमी, मिट्टी के क्षरण और बाजार जोखिमों से संबंधित चुनौतियों का समाधान करके, तथा संस्थागत सहयोग और तकनीकी अपनाने को मजबूत करके, दीर्घकालिक कृषि स्थिरता और ग्रामीण समृद्धि सुनिश्चित करना संभव है।

सुझाव

समन्वित प्रयासों के माध्यम से दीर्घकालिक कृषि स्थिरता, आर्थिक स्थायित्व और पारिस्थितिक संतुलन प्राप्त किया जा सकता है। चौमू तहसील के लिए भविष्य–उन्मुखी कृषि रणनीति को निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित किया जा सकता है –

- टिकाऊ फसल विविधीकरण को बढ़ावा देना चाहिए।
- जल संसाधनों का कुशल उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए।
- बाजार और संस्थागत सहयोग प्रणालियों को सुदृढ़ बनाना चाहिए।
- लघु और सीमांत किसानों के लिए समावेशी विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए।

संदर्भ

- शर्मा, पी. डी. (2015), कृषि भूगोल, नई दिल्ली, रस्तोगी पब्लिकेशन्स।
- चांदना, आर. सी. (2010), जनसंख्या भूगोल, अवधारणाएँ, निर्धारक और प्रतिरूप, नई दिल्ली, कल्याणी पब्लिशर्स।
- जिला सांख्यिकी (2022), आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय जयपुर।
- ब्लॉक सांख्यिकी रूपरेखा (2022–23), आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय जयपुर।
- भारत सरकार, (2011), भारत की जनगणना, नई दिल्ली, भारत के रजिस्ट्रार जनरल।
- राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड, (2020), कृषि विपणन रिपोर्ट।
- https://agricoop-nic-in, https://agriculture.rajasthan.gov.in and https://icar-org-in.